डॉ रूचिरा ढींगरा
एसोसिएट प्रोफेसर,हिंदी विभाग
शिवाजीकालेज,दिल्लीविश्वविद्यालय

**जैनेंद्र की सुनीता**

Lesson 7

**वातावरण**

जैनेंद्र के उपन्यास मनोवैज्ञानिक > वातावरण का स्वल्प अंकन

परिस्थितिजन्य अन्तः बाह्य परिवेश का अंकन

अंधकारपूर्ण सुनसान वन हरिप्रसन्न की कामवासना को उभरता
पति-पत्नी के संबंधों को भी एक नए रूप में अंकित
जैनेंद्र सामाजिक नैतिकता को अस्वीकार

सुनीता और श्रीकांत के दांपत्य जीवन में व्याप्त नीरसता और रिक्ति को पति द्वारा सोची योजना से जोड़

प्रेम की व्याख्या करने के साथ ही उसके प्रभाव को व्यंजित

प्रेम जीवन में नया आलोक , वेग और उल्लास की सृष्टि

" बात यह है कि पानी बहते -बहते कहीं बंध गया है । उसे खुलना चाहिए । जीवन को कुछ बहिर्गमन मिले , और घर के भीतर की गृहस्थी को घर के बाहर की दुनिया का और अधिक संसर्ग , और अधिक संघर्ष मिले तो शायद कुछ इसकी सृष्टि हो , चैतन्य जागे। बद्ध परिमाण , एक ही एक ढंग के रहने से नयी समस्याएं कहां से उठेगी ! और जब तक नवीनतम वर्तमान प्रतिपल नवीनतर परिस्थिति और नवीनतर प्रश्न नहीं सामने लाते हैं , तब तक आकांक्षा और

कर्म से भी नव्य- बोध और प्राणों में नव स्फूर्ति कैसे होगी। "(1)(सुनीता, जैनेंद्र , पृष्ठ  15)